International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications
ISSN: 2319-7471, Vol. 10 Issue 10, October, 2021, Impact Factor: 7.751

व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से उद्यमिता विकास एवं आर्थिक उन्नति

डॉ0 शरद कुमार भटनागर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (वाणिज्य), राजकीय महाविद्यालय, बी0बी0 नगर, जिला बुलन्दशहर, उ0प्र0

सार

मानव मे अंतर्निहित समस्त शक्तियों को विकसित कर सामाजिक वातावरण के अनुरूप विकसित करना ही शिक्षा है। शिक्षा का उद्देश्य सूचना अथवा आंकड़ों को एकत्रित कर तार्किक युक्ति से सिर्फ वस्तुओं को सत्यापित करना ही नहीं है अपितु शिक्षा का लक्ष्य ऐसी पीढ़ी को तैयार करना है जो स्वयं अपने आप में पूर्ण हो, सदैव उद्यमशील हो तथा समाज में औरों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनकर एक मिशाल के रूप में अपना सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करे। निसंदेह आज शिक्षा का क्षेत्र काफी व्यापक हो चुका है। जिसके अन्तर्गत व्यावसायिक शिक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्य शब्दों में शिक्षा को व्यावसायिक कौशल के साथ अंतर्निहित करना ही व्यावसायिक शिक्षा कहलाता है, परन्तु व्यावसायिक शिक्षा का वास्तविक अर्थ अपने भीतर इससे भी अधिक विस्तृत दृष्टिकोण व उद्देश्यों को समाहित किये है जो वर्तमान युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन चुका है। आधुनिक युग में शिक्षा के महत्व को उच्च स्तरीय जीवन शैली, व्यावसायिक कौशल, रोजगारपरक शिक्षा, स्वर्णिम भविष्य निर्माण, कॅरियर व जीविकोपार्जन आदि दृष्टिकोण से अधिक देखा जाने लगा है जो वास्तव में समय की मांग भी है। व्यावसायिक शिक्षा छात्र एवं छात्राओं को विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों में उपलब्ध विविध पाठ्यक्रमों के द्वारा व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। व्यावसायिक शिक्षा, तकनीक व कौशल पर आधारित ऐसा प्रशिक्षण है जिसे प्राप्त कर मनुष्य स्वम् के लिये विशिष्ट पेशेवर पहलुओं से संदर्भित व्यापार या व्यवसाय चुनने के साथ–साथ समाज में अन्य लोगों के निमित्त भी उद्यमिता के अवसर विकसित कर सकता है और देश में वाणिज्यिक गतिविधियों को अधिक बढावा देकर आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी उपादेयता को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में नई शिक्षा के परिवर्तित ढ़ाचे का जो अभिन्यास हुआ है, इसमें व्यावसायिक शिक्षा को विशेष रूप से समाहित किया गया है। इसके अन्तर्गत छात्र और छात्राओं को आरम्भ से ही तकनीकी व व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित कर उनके कौशल विकास पर विशेष बल दिया गया है। जिससे देश का हर बालक अपने स्वर्णिम भविष्य की गाथा स्वम् लिख सके और आर्थिक रूप से समृद्ध राष्ट्र निर्माण की आधारशिला अधिक मजबूत हो सके।

प्रमुख शब्द– *व्यावसायिक शिक्षा, उद्यमिता, उद्यमी, कौशल विकास*

शिक्षा शब्द से तात्पर्य है सीखना और सिखाना। अंतर्मन से सीखने व जागृत मन से सिखाने की क्रिया ही शिक्षा है। सीखने और सिखाने की इस प्रक्रिया में मानव की आंतरिक प्रतिभा को उभार कर आवश्यक ज्ञान प्रदान करना ही शिक्षा है जिससे मनुष्य के व्यक्तित्व का चहुमुंखी विकास संभव होता है। शिक्षा हमें विद्वान बनाती है। शिक्षा हमें प्रत्येक परिस्थिति में, हर संघर्ष का पूरी सजगता व सकारात्मक ऊर्जा के साथ मुकाबला करने की असीम शक्ति प्रदान करती है। एडम्स महोदय शिक्षा को द्विध्रुवीय प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करते है। *उनके* अनुसार शिक्षा प्रक्रिया में एक ध्रुव पर शिक्षार्थी होता है तथा दूसरे ध्रुव पर शिक्षक। वास्तव में शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो जीवनपर्यन्त चलती ही रहती है। अर्थात शिक्षा जन्म से मृत्यु तक चलने वाली सतत प्रक्रिया है जो पग–पग पर मानव के विकास व उत्थान की राह सुलभ करती है और उसे प्रत्येक वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने में मदद करती है। शिक्षा हमें जीवन के कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों को भली प्रकार से समझने व निभाने की योग्यता प्रदान करती है जो हमारे विचार, व्यवहार और दृष्टिकोण में ऐसा

सकारात्मक परिवर्तन लाती है कि वह समाज, राष्ट्र और समूचे संसार के लिये लाभप्रद होता है। वास्तव में शिक्षा से समाज व हमारी चेतना संकीर्णता के बंधनों से मुक्त होती है।

व्यावसायिक शिक्षा क्या है

सामान्य शब्दों में शिक्षा को व्यवसाय के साथ समाहित करना ही व्यावसायिक शिक्षा कहलाता है। "व्यावसायिक शिक्षा" दो शब्दों के संगम से बना है। जिसमें प्रथम शब्द "व्यवसाय" से मूल तात्पर्य आजीविकोपार्जन हेतु किये जाने वाले कार्य तथा "शिक्षा" से अभिप्राय प्रशिक्षण अथवा सीखने से है अर्थात व्यावसायिक शिक्षा वह है जो हमें व्यवसाय संचालन की कुशलताओं से सुसज्जित करती है। तकनीकी शिक्षा को भी व्यावसायिक शिक्षा का ही एक अंग माना जाता है। व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति को किसी विशेष कार्य या व्यवसाय से संबन्धित तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करती है लेकिन इसका अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक है। किसी विशेष लक्ष्य को मध्यनजर रखते हुये मनुष्य को उसके अनुरूप तैयार करना ही व्यावसायिक शिक्षा की श्रेणी में रखा जा सकता है। व्यावसायिक शिक्षा वर्तमान समय की पुकार है। आज उसी शिक्षा को गुणवत्ता से परिपूर्ण माना जाता है जो युवा वर्ग को जीविकोपार्जन करने योग्य बनाती है। व्यावसायिक शिक्षा को तकनीकी शिक्षा के रूप में भी जाना जाता है। जिस प्रकार हमारे देश की जनसंख्या में निरन्तर बढ़ोतरी हो रही है उसे दृष्टिगत रखते हए सब जन को रोजगार उपलब्ध करा पाना सरकार के लिये बहुत कठिन कार्य है। व्यावसायिक शिक्षा, पुस्तकीय ज्ञान पर कम अपितु व्यावहारिक ज्ञान (प्रैक्टिकल नॉलिज) पर अधिक ध्यान केन्द्रित करती है जिससे छात्र किसी विषय विशेष की तकनीक या प्रौद्योगिकी पर गुढता से महारत हासिल कर लेते है। वास्तव में व्यावसायिक शिक्षा छात्र एवं छात्राओं को व्यवसाय चुनने, करने व उस व्यवसाय से संबंधित योग्यता प्राप्त करने का सुअवसर प्रदान करती है। व्यावसायिक शिक्षा का शुभारंभ राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964–66 के सुझावों के अधीन मंथनोपरान्त हुआ। जिसके आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने अपनी सहर्ष मंजूरी प्रदान की और वह शिक्षा का एक माध्यम बन सकी। तत्कालीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्ष 1995 तक कक्षा 02 से उच्च कक्षा के 25 प्रतिशत छात्र व छात्राओं को व्यावसायिक शिक्षा में शामिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया था। साथ ही उस समय व्यावसायिक शिक्षा का अधिक विस्तार करने के उद्देश्य से दूरस्थ शिक्षा में भी इसको शामिल किया गया।

युवा वर्ग को व्यापार शिल्प या तकनीकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में विशेष कौशल और प्रशिक्षण प्राप्त करना व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से संभव होता है। व्यावसायिक शिक्षा व्यापारिक गतिविधियों और प्रशिक्षण पर केंद्रित होती है जो छात्रों को विशिष्ट तकनीकी या प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता का विकास करती है। वह प्रशिक्षण जो विशिष्ट नौकरी, व्यापार या कौशल विकास जैसे– पर्यटन, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर व हार्डवेयर, कंप्यूटर नेटवर्किंग, बैंकिंग और वित्त, फैशन डिजाइनिंग, संपत्ति प्रबंधन, और कई अन्य क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के रोजगारपरक कार्यों के निमित्त विभिन्न पाठ्यक्रमों के आधार पर ध्यान केन्द्रित करते हुए विशिष्ट ज्ञान प्रदान करें, व्यावसायिक शिक्षा की श्रेणी में आता है जिसमें व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत विद्यार्थी अपने कौशल और रूचि के अनुसार उपलब्ध विभिन्न पाठ्यक्रमों को चुन सकते हैं।

उद्यमिता, उद्यमी तथा उद्यमिता विकास

किसी भी नए संगठन को प्रारंभ करने की भावना उद्यमिता कहलाती है। वर्तमान अथवा भविष्य के शुभ अवसरों का पूर्व दर्शन करने के उपरांत किसी भी व्यावसायिक संगठन का शुभारंभ उद्यमिता का प्रथम चरण है। एक ओर जहां उद्यमिता में अधिकांश लाभ प्राप्त करने की प्रबल संभावनाएं होती है वहीं दूसरी ओर अनिश्चितता जोखिम व अन्य खतरे की अति प्रबल संभावनाएं निहित होती है। उद्यमिता से तात्पर्य किसी व्यक्तिगत गुण से नहीं अपितु एक आचरण से है। किसी भी व्यवसायी को व्यवसाय के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में अति महत्वपूर्ण निर्णय लेने की आवश्यकता होती है लेकिन उसके प्रत्येक निर्णय में जोखिम की प्रबल संभावनाएं निहित होती है। जिसे केवल आचरण और अनुभव के द्वारा ही वहन किया जा सकता है। वास्तव में उद्यमी द्वारा किया गया कार्य ही उद्यमिता है। उद्यमिता वह आर्थिक क्रिया है जिसके अंतर्गत बाजार में व्याप्त संभावनाओं को पहचानने की प्रक्रिया निहित होती है। परंपरागत शब्दों में उद्यमिता से आशय उद्योग एवं व्यवसाय में निहित विभिन्न

अनिश्चितताओं एवं जोखिम का सामना करने की क्षमता, योग्यता एवं प्रवृत्ति से होता है। उद्यमिता एक निरंतर प्रक्रिया होने के साथ आचरण का महत्वपूर्ण रूप बन जाती है। उद्यमिता के अंतर्गत उद्यमी सामाजिक एवं व्यावसायिक वातावरण में नए–नए अनुसंधान, प्रयोग तथा उपयोगिताओं का सृजन कर रोजगार एवं विकास के अवसरों में वृद्धि करने का कार्य करता है। उद्यमिता के अंतर्गत मुख्य रूप से उद्यमी को व्यावसायिक अवसरों का ज्ञान, औद्योगिक इकाई को संगठित करना तथा औद्योगिक इकाई को लाभप्रद दिशा में गतिशीलता के साथ संचालित करने जैसे अति महत्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं। जिसमें व्यावसायिक तथा रोजगारपरक शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामान्य शब्दों में उद्यमिता को प्रारंभ करने वाला व्यक्ति ही उद्यमी कहलाता है। अर्थात उद्यमी वह है जिसके द्वारा किसी उद्यम की स्थापना होती है, जो संबंधित जोखिम को वहन करने का साहस करता है, किसी नए उद्योग अथवा उपक्रम के लिए प्रारंभिक योजना से लेकर पूंजी और श्रम की व्यवस्था तक समस्त कार्य योजना तैयार करता है और सारे कार्यों की नीति निर्धारित करता है। वास्तव में उद्यमी वह है जो न केवल स्वयं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन करता है अपितु अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर प्रदान कर आर्थिक उन्नति में सहायक होता है। एक सफल उद्यमी पर देश की अर्थव्यवस्था निर्भर होती है। इसी श्रृंखला में उद्यमिता विकास से आशय व्यक्तियों की योग्यताओं को पहचानने, उनके उपयोग हेतु अधिकतम शुभ अवसर उपलब्ध कराने तथा साहसी क्षमताओं को विकसित करने की प्रक्रिया से है। व्यवसाय का उद्देश्य अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है। उद्यमिता विकास से व्यवसायियों में विशेष रूप से साहसिक प्रवृत्ति पैदा होती है तथा सृजनता का विकास होता है। जिससे वह व्यावसायिक अवसरों को खोज कर नवीन उद्योग धंधों/उद्यम को स्थापित करता है। उद्यमिता विकास से औद्योगिक गतिविधियाँ प्रोत्साहित होकर आर्थिक विकास की दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाती हैं। उद्यमी सदैव चुनौतियों का सामना करते हुए अनेकों आंतरिक व बाहरी शक्तियों के प्रति सचेत रहता है। व्यवसाय अथवा उद्योग में लाभदायक अवसर की खोज करने के लिए व्यावसायिक पर्यावरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन उद्यमिता के लिए अति महत्वपूर्ण है।

व्यावसायिक शिक्षा के उद्देश्य, क्षेत्र एवं उद्यमिता विकास पर प्रभाव

व्यावसायिक शिक्षा के द्वारा मनुष्य में जीविकोपार्जन हेतु आवश्यक कौशल की प्रवृत्ति विकसित होती है। व्यावसायिक शिक्षा के द्वारा छात्र एवं छात्राओं को उनके संस्थानों में निरंतर क्रियाशील एवं गतिशील रखा जाता है जो उनके शारीरिक व मानसिक विकास में मदद करता है। व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को मूर्त रूप प्रदान करती है और प्रशिक्षु को हर हालात का सामना करते हुए सामाजिक व पारिवारिक उत्तरदायित्वों को निभाने योग्य बनाती है। व्यावसायिक शिक्षा किसी भी देश के युवा वर्ग को समाज के साथ जोड़ने और सामाजिक कार्यों में योगदान करने हेतु तैयार करती है। व्यावसायिक शिक्षा का मुख्य लक्ष्य राष्ट्र के युवा वर्ग को इस योग्य बनाना है कि वह परिवार व समाज में पूरे सम्मान पूर्वक रहने योग्य बन सके। इसके द्वारा छात्र एवं छात्राओं में उद्यमशीलता की भावना इस प्रकार जागृत होती है कि वे अपनी रुचि के अनुसार व्यवसाय का चुनाव करने उपरांत उसमें दक्षता प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं और एक दिन उस क्षेत्र में पूर्ण दक्षता प्राप्त कर सामाजिक परिवर्तनों को सही दिशा प्रदान करते हुए राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभातें हैं। वास्तव में व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को रोजगारोन्मुख बनाना ही नहीं अपितु अपने देश की राष्ट्रीय आर्थिक संरचना को मजबूती प्रदान करना भी है। व्यावसायिक शिक्षा देश की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि कर देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है जिससे शिक्षा के विस्तार को भी बढ़ावा मिलता है। व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक जनमानस की रोजगार क्षमताओं को विकसित कर उनकी रूचि के अनुसार व्यावसायिक अवसर उपलब्ध कराना है। यह प्रत्येक नागरिक को कौशल से परिपूर्ण कर जनशक्ति की मांग और आपूर्ति के बीच के अंतर को काफी हद तक कम करती है। इसका लक्ष्य शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अवसरों की तलाश कर विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की भावना को पैदा करना है तथा निरूद्देश्य एवं रुचि विहीन उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों को नवीन विकल्प तथा स्वरोजगार आधारित पाठ्यक्रमों को उपलब्ध कराना है। विशेषज्ञों का मानना है कि दुनिया में अब हर व्यक्ति को किसी ना किसी विशेष कौशल में विशिष्टता प्राप्त करना आवश्यक है। वर्तमान सदी में केवल वे लोग जो किसी विशेष कौशल से परिपूर्ण है, किसी निश्चित क्षेत्र में अपनी पकड़ रखते हैं तथा किसी व्यावसायिक विषय विशेष में पूर्ण विशेषज्ञता है, केवल

वही अच्छी नौकरियां सुरक्षित रख सकते हैं तथा अन्य लोगों हेतु भी रोजगार के अवसर उपलब्ध करा सकते हैं। वर्तमान समय की यह विशेषता है की नौकरी पाना जितना कठिन है उससे भी कहीं अधिक कठिन है उस नौकरी को बनाए और बचाए रखना, जो केवल व्यक्ति के अपने विशेष कौशल ज्ञान से ही संभव हो सकता है। व्यावसायिक शिक्षा के मुख्य उद्देश्य और निर्धारित लक्ष्य के कारण सरकारी और गैर सरकारी दोनों क्षेत्रों में उच्च स्तरीय व्यावसायिक कौशल विशेषज्ञों की मांग में वृद्धि हुई है।

भारतवर्ष युवाओं का देश है किंतु आज बढ़ती हुई जनसंख्या और उसी के सापेक्ष बढ़ती हुई बेरोजगारी चिंता का नहीं अपितु चिंतन का विषय है। इसका समाधान केवल सरकार का ही उत्तरदायित्व नहीं बल्कि हर आम नागरिक का भी फर्ज है और यह केवल तभी संभव हो सकता है जब हर व्यक्ति अपना कौशल विकास करके स्वयं उद्यम का सृजन करेगा। आज लगभग 135 करोड़ जनसंख्या वाले विकासशील देश भारत में सभी के लिए रोजगार के अवसर जुटा पाना सरकार के लिए व्यावहारिक रूप से नामुमकिन है। इस देश से बेरोजगारी का अंत तभी हो सकेगा जब हम व्यावसायिक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों का अवलोकन कर अपना उत्थान स्वयं सृजित करेंगे और यह केवल तभी संभव हो सकता है जब हमारे देश का हर हाथ हुनरमंद होगा। पूर्व दशकों में रोजगार प्राप्त करने के बहुत सीमित अवसर होते थे। परंतु आज व्यावसायिक शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं आधुनिक हो चुका है। आज व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत वाणिज्य, गृह विज्ञान, पर्यटन विभाग, स्वास्थ्य एवं पैरा चिकित्सकीय, अभियांत्रिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स, आईटी, हॉस्पिटैलिटी, हेल्थ केयर, टेलीकॉम, एकाउंटेंसी एंड ऑडिटिंग, मार्केटिंग और सेल्स, बैंकिंग, बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, इलेक्ट्रिकल तकनीकी, इवेंट मैनेजमेंट, टूरिज्म मैनेजमेंट, होटल मैनेजमेंट कंप्यूटर नेटवर्क मैनेजमेंट, रिटेल ट्रेनिंग एंड मार्केटिंग, टूर एंड ट्रैवल मैनेजमेंट आदि–आदि ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें हम निपुण होकर अपने बेहतरीन भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। कुशल हाथ ही एक नवीन और स्वर्णिम भविष्य के निर्माता बनते हैं। यह सत्य है कि व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से हाथों में हुनर पैदा होता है और व्यक्ति भीड़ से अलग खड़ा होता है।

अब व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिकता ने भी अपने पंख फैला लिए हैं। आज बहुत सारी कंपनी प्रशिक्षित वर्ग की तलाश में रहती है। आज विभिन्न प्रकार की जॉब वेबसाइट आदि विभिन्न क्षेत्रों में कौशल प्राप्त लोगों के लिए रिक्रूटमेंट निकालती रहती है। यहां तक भी देखा जाने लगा है कि अब कुछ कंपनियां अपनी जरूरत और मांग के अनुरूप पाठ्यक्रम डिजाइन कर ऑनलाइन कोर्सेज भी करवाने लगी है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम व प्रशिक्षण के बाद संबंधित कंपनी को उनकी आवश्यकता व मांग के अनुसार सुयोग्य व अति प्रशिक्षित कर्मचारी अथवा अधिकारी मिल जाता है। इस प्रकार के व्यावसायिक कोर्स कई बार कुछ प्रोफेशनल वेबसाइट व ऑनलाइन माध्यम से भी कराए जाते हैं जो व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता को और अधिक बढ़ावा देते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत में पारंपरिक शिक्षा प्रणाली युवाओं की मांग और आकांक्षाओं को पूर्ण स्वरूप प्रदान करने में सक्षम नहीं है।

आज किसी भी विश्वविद्यालय से कोई भी डिग्री प्राप्त करने के बाद भी इसकी सुनिश्चितता नही होती है कि वह संबन्धित व्यक्ति तुरन्त ही किसी भी आजीविकोपार्जन कार्य में संलग्न हो सकेगा और अपने भविष्य के सपनों को साकार करने में सक्षम हो जायेगा। हमारा युवा वर्ग कई बार वित्तीय कमी व अन्य परिस्थितियों के कारण शिक्षा छोड़ देता हैं और मासिक नौकरी कर रहा होता है। जहाँ उसे बहुत थोड़ा भुगतान किया जाता है और अक्सर नियोक्ता द्वारा शोषण भी किया जाता है। भारत में रोजगार को बढ़ाने के लिए बहुत जरूरी है कि सभी को रोजगार उन्मुख कौशल प्रदान किया जाए। आज समय की पुकार है कि हमारे देश में कौशलपूर्ण विशेषज्ञों की मांग निरंतर बढ़ रही है। व्यावसायिक शिक्षा रोजगार पाने में जॉब सीकर्स का सहयोग करती है। आज वास्तव में भारत देश का आईटी सेक्टर अपनी विशिष्टता के कारण ही समस्त संसार में आकाशीय पटल का ध्रुव तारा माना जाता है। व्यावसायिक प्रशिक्षण हमारे युवाओं (पुरुषों और महिलाओं दोनों) की कार्य सीखने में मदद करता है। व्यावसायिक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में व्यावहारिक कौशल सीखना हमारे युवा वर्ग को रोजगार खोजने या अपने उद्यम को शुरू करने में सक्षम बनाता है और वे अपने पूर्ण स्वाभिमान के साथ आजीविका कमा सकते है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में व्यावसायिक शिक्षा का स्थान

भारत में प्रथम शिक्षा नीति का गठन 24 जुलाई 1968 में हुआ था। जिसमें राष्ट्रीय एकता एवं समाजवाद का प्रतिबिम्ब मुख्य रूप से दिखाई देता था। वर्ष 1986 में शिक्षा नीति में पुनः परिवर्तन किया गया। उसके पश्चात वर्ष 2016 में नई शिक्षा नीति पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया गया तथा नई शिक्षा नीति निर्माण के लिये जून 2017 में पूर्व इसरो प्रमुख (चीफ) के. कस्तूरीरंगन जी की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गयी। जिसने मई 2019 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रारूप प्रस्तुत किया। लगभग 03 वर्षो के कठिन परिश्रम, अनुसंधान व दूरदर्शिता के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का गठन हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, वर्ष 1968 और वर्ष 1986 के उपरान्त स्वतन्त्र भारत देश की तृतीय शिक्षा नीति के रूप में राष्ट्र को समर्पित हो गयी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत समानता, गुणवत्ता, शिक्षा की वहनता और उत्तरदायित्व और विशेष रूप से व्यावसायिक शिक्षा पर मुख्य रूप से बल दिया गया है। जहाँ एक ओर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शैक्षिक पाठ्यक्रम को 5+3+3+4 संरचना पर आधारित रखने पर बल दिया गया है वहीं भाषा की बाध्यता को दूर करने व दिव्यांग विद्यार्थियों संग सभी के लिये तकनीक/व्यावसायिक शिक्षा को अति सुगम बनाने के प्रयोग को बढ़ावा देने पर अधिक बल दिया गया है। नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत व्यावसायिक शिक्षा में विद्यार्थियों की रचनात्मकता, तार्किक सोच एवं नवाचार युक्त निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करने को प्रोत्साहित किया गया है। इसके अन्तर्गत कक्षा 6 से ही पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल कर शैक्षिक वातावरण मे समाहित करने की बात कही गयी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने का प्रतिशत, पचास प्रतिशत तक लाने के लिए वर्ष 2025 तक का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वास्तव में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत चरणबद्ध रूप से देश के समस्त स्कूलों और उच्च शिक्षण संस्थानों में महत्वपूर्ण विषयों और अलग–अलग पाठ्य चर्चा के एकीकरण की परिकल्पना की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बागवानी, मिट्टी के बर्तन, बिजली का काम के साथ–साथ कृत्रिम बुद्धि तथा रोबोटिक्स तक पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के क्षेत्र में कुछ बदलाव करके कौशल विकास के लिए छात्रों को इंटर्नशिप के प्रावधान पर भी चर्चा की गई है। देश के विभिन्न प्रांतों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा को लेकर बहुत अधिक उत्साह पूर्ण वातावरण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा में रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से बुनियादी शिक्षा से ही विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने पर जोर दिया जाएगा जिससे उनका चहुँमुखी विकास हो और उनकी विभिन्न कौशल कलाओं के प्रति रूचि बढ़े। व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत वर्ष में कुछ दिन बस्ता रहित शिक्षा के दिन निर्धारित कर विभिन्न प्रकार की कलाओं, प्रश्नोत्तरी, खेल और व्यावसायिक हस्तकलाओं को प्रोत्साहित किये जाने पर बल दिया गया है। इसके अंतर्गत व्यावसायिक पाठ्यक्रम जैसे– पोल्ट्री फार्मिंग, एग्रीकल्चर, फार्म मैनेजमेंट, हॉर्टिकल्चर, रिपेयर ऑफ़ रेडियो एंड टीवी, ऑफिस मैनेजमेंट, बुककीपिंग एंड अकाउंटेंसी, बेकरी, गारमेंट मेकिंग, स्टोर कीपिंग, फोटोग्राफी, प्रिंटिंग, बाइंडिंग एंड पेपर कटिंग, कंप्यूटर एप्लीकेशन, वेल्डिंग टेक्नोलॉजी एंड फैब्रिकेशन आदि–आदि सहित अनेकों व्यावसायिक पाठ्यक्रम विकसित किए जाएंगे। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी और प्रतिस्पर्धी युग में एक अच्छी नौकरी अथवा सम्मान पूर्ण रोजगार की तलाश करना वाकई बेहद मुश्किल कार्य है किंतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विशेष स्थान प्राप्त तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों को प्रोत्साहित कर व्यावहारिक कौशल और प्रशिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों में उद्यमिता विकास सरलतम रूप में हो सकेगा और व्यावसायिक शिक्षा उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने में काफी मददगार साबित हो सकेगी।

व्यावसायिक प्रशिक्षण उद्यमशील बनाता है

किसी भी उद्योग को शुरू करने से पहले मुख्य रूप से उसके आवश्यक पहलुओं को समझना महत्वपूर्ण होता है जिससे उद्यमी को अपने उद्योग के प्रारंभिक चरण से ही किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। वास्तव में किसी भी उद्यमी द्वारा प्रारंभ किया गया कोई भी व्यवसाय अथवा उद्योग की तुलना एक विशाल छायादार वृक्ष से की जा सकती है। उद्यमी के अंतःकरण में उत्पन्न हो रहे विचार एवं कल्पनाएं उस

बीज की भांति होते हैं जिनके माध्यम से वह व्यवसाय रूपी छायादार वृक्ष को तैयार करने की परियोजना बनाकर अपने अंदर उद्यमिता विकास की भावना को पैदा करता है। जिस प्रकार किसी भी पौधे को बड़ा करने के लिए जल, वायु तथा प्रकाश सर्वाधिक महत्वपूर्ण है उसी प्रकार व्यवसाय में उद्यमी अपनी पूंजी का निवेश करता है। व्यवसाय में प्रयोग होने वाला कच्चा माल, वित्त, यातायात व्यवस्था आदि उस पौधे की जड़ रूपी स्रोतों को प्रदर्शित करते हैं। पौधे से वृक्ष बनने की प्रक्रिया के दौरान टहनियों की भांति व्यवसाय में विभिन्न गतिविधियों हेतु विभिन्न विभाग होते हैं जिनके मध्य सामंजस्य स्थापित करना बड़ा महत्वपूर्ण होता है। वृक्ष के प्रारंभिक पुष्प विपणन एवं बिक्री को इस प्रकार प्रदर्शित करते है कि व्यवसाय में जिस उत्पाद अथवा सेवा का उत्पादन हो रहा है, वह इतनी गुणवत्ता पूर्ण एवं आकर्षक हो कि उपभोक्ताओं को अपनी ओर सहजता पूर्वक आकर्षित कर सके। उत्पाद अथवा सेवा की बिक्री के उपरांत व्यवसायी को प्राप्त होने वाला लाभ इस वृक्ष के फल के समान होता है किंतु जिस प्रकार कोई भी वृक्ष सदैव एक समान नहीं रहता है, वृक्ष कभी अधिक फलदार, छायादार एवं अत्यंत घना हो जाता है और कभी पतझड़ की स्थिति का भी सामना करना होता है उसी प्रकार एक उद्यमी को भी व्यवसाय में लाभ तथा हानि का जोखिम उठाना पड़ता है। किसी भी व्यवसाय के लिए व्यावसायिक शिक्षा तथा कौशल अत्यंत आवश्यक हैं। उद्यमी में कौशल विकास पारंपरिक रूप से भी होता है अथवा उसे व्यावसायिक शिक्षा/प्रशिक्षण के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है। यदि कोई बालक बचपन से किसी कौशल पूर्ण कार्य को देखता अथवा करता रहा है तो वह उससे संबंधित व्यवसाय को सरलता पूर्वक प्रारम्भ कर सकता है।

परन्तु किसी नवीन उद्यम को प्रारम्भ करने के लिए एक उद्यमी के भीतर नवाचारी दृष्टिकोण, बौद्धिक कौशल व व्यावसायिक प्रशिक्षण की नितांत आवश्यकता होती है। व्यावसायिक प्रशिक्षण व्यक्ति के अंदर एक सफल उद्यमी बनने के गुणों को विकसित करते है। वास्तव में व्यावसायिक शिक्षा उद्यमिता विकास को बढ़ावा देती है और व्यक्ति अपनी विशेष रूचि के क्षेत्र में विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त कर उद्यमशीलता की राह पर अग्रसर हो सकता है। देश के विकास में उस देश की शिक्षा व्यवस्था का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है और अगर उस शिक्षा का उद्देश्य बालकों को व्यवसाय दिलाना एवं जीविकोपार्जन योग्य बनाना हो तो उस राष्ट्र का विकास निश्चित होता है। शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्यों की कसौटी पर तभी खरी उतर सकती है जब वह छात्र एवं छात्राओं को जीवन में स्वावलंबी व पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बना सके और यह व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से ही संभव होता है। आज के युग में शिक्षा की गुणवत्ता को अधिक उत्कर्ष तक पहुंचाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा का समावेश नितांत आवश्यक है। व्यावसायिक शिक्षा उस समय और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जब निर्धनता के कारण कोई अपनी उच्च शिक्षा पूर्ण करने में असमर्थ होता है। ऐसी स्थिति में रोजगार प्राप्त करने का एकमात्र साधन केवल व्यावसायिक शिक्षा के रूप में ही रह जाता है क्योंकि व्यावसायिक शिक्षा के कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जो अति न्यूनतम व्यय के सापेक्ष कौशल प्रदान कर रोजगार दिलाने में सहायक सिद्ध होते हैं और व्यक्ति जीविकोपार्जन योग्य बन कर अपना और अपने परिवार का भरण पोषण कर सकता है।

उपसंहार

आज वास्तव में व्यावसायिक शिक्षा जितनी अधिक आवश्यक है उसके सापेक्ष व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकने वाले विद्यार्थियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। और इस तथ्य के संदर्भ में एक कारण यह है कि अब तक व्यावसायिक शिक्षा मुख्य रूप से माध्यमिक या उच्चतर कक्षा पर केंद्रित रही है। इस दिशा में व्यावसायिक शिक्षा को मुख्य धारा की शिक्षा से कम लाभप्रद शिक्षा माना जाता रहा है और कहा जाता है कि यह मुख्य रूप से उन छात्र–छात्राओं के लिए उपयोगी है जो मुख्य धारा की शिक्षा के साथ परस्पर सामंजस्य नहीं बना पाते हैं। यह धारणाएं वास्तव में गंभीर चिंता का विषय है और इनसे उबरने के लिए इन तथ्यों को नवीन आकलन की आवश्यकता है। वास्तव में आज आवश्यकता है कि व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े समस्त शिक्षण संस्थान, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय आदि विभिन्न योजनाबद्ध तरीकों से व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को मुख्य धारा की शिक्षा में एकीकृत करें। आज आवश्यकता है कि प्रत्येक बालक कम से कम एक व्यवसाय से जुड़े कौशल को अवश्य सीखे और अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों से भी परिचित हो। इसके फलस्वरूप वह श्रम, उसके

महत्व, संस्कृति की उपादेयता, भारतीय शिल्प कला का ज्ञान और कारीगरी सहित विभिन्न व्यवसायों के महत्व से भली प्रकार परिचित हो सकेगा और निश्चित रूप से एक दिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्य मील का पत्थर साबित हो सकेगा।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक शिक्षा युवा पीढ़ी के लिए आवश्यकता नहीं, नितांत अनिवार्यता है जिसे प्रत्येक दशा में हमें आत्मसात करना होगा। जिससे क्षमताओं का विकास हो सकेगा और अगले दशक तक चरणबद्ध तरीके से सभी स्कूल, माध्यमिक से लेकर उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थान तक शैक्षणिक विषयों के साथ व्यावसायिक शिक्षा एकीकृत हो सकेगी। इसके लिए विभिन्न शिक्षण संस्थाओं को आईटीआई, पॉलिटेक्निक अथवा अन्य स्थानीय उद्योगों आदि से निरंतर परस्पर संपर्क करना आवश्यक होगा। व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए स्कूलों में हब और स्पोक मॉडल के आधार पर कौशल प्रयोगशाला भी सृजित की जाएंगी, जहां अन्य शिक्षण संस्थान भी इस सुविधा का उपयोग कर लाभान्वित हो सकेंगे। व्यावसायिक शिक्षा उन विद्यार्थियों के लिए एक आशीर्वाद है जो किसी कारणवश या परिस्थितिवश उच्च शिक्षण संस्थानों में उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं। कौशल विकास एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण, विद्यार्थियों को उद्यमशील बनने के अवसर चुनने तथा कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रदान की गई गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक शिक्षा से अपना भविष्य उज्जवल बनाने का सुअवसर प्रदान करता है। साथ ही गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों को अलग से सक्षम तथा महिला वर्ग को स्वरोजगार उत्पन्न करने के अवसर भी प्रदान करता है। किसी भी राष्ट्र में व्यावसायिक शिक्षा की उपलब्धता और गुणवत्ता उस देश की औद्योगिक तथा आर्थिक प्रगति को निर्धारित करती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि व्यावसायिक शिक्षा न केवल उद्यमशीलता को विकसित कर रोजगार के अवसरों में वृद्धि करती है अपितु प्रति व्यक्ति आय को समृद्ध कर राष्ट्र की आर्थिक उन्नति की राह को भी प्रशस्त करती है।

संदर्भ सूची

- https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/national-education-policy-2020
- https://www.patrika.com/jaipur-news/now-vocational-education-will-be-available-from-class-6th-6984447/
- https://www.livehindustan.com/career/story-new-education-policy-training-in-vocational-education-will-start-from-junior-classes-3884136.html
- https://en.wikipedia.org/wiki/Vocational_education
- https://sarkariguider.in/needs-of-vocational-guidance-in-education-in-hindi/
- https://www.aicte-india.org/education/vocational-education
- Curriculum development in vocational and technical education] Curtis R- Finch] John R- Crunkilton
- Learning to Arun(a plea and a plan for a vocational education] John Augustus Lapp
- Vocational education and vocational guidance: is survey and preliminary report by a committee appointed by the lower state teachers association] Anonymous
- https://digitaliindia.com/new-education-policy-2020-in-hindi/
- शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श,डॉ.एस.सी.ओबरॉय
- https://www.scotbuzz.org/2017/07/udyamita.html
- https://www.hindusthanpost.com/lifestyle/vocational-education-impact-indian-economy-employment-anurag-gupta-ampersand/38110/
- उद्यमिता विकास / डॉ.यू.सी.गुप्ता
- https://msde.gov.in/ncvet
- https://www.mpsos.nic.in